शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

डॉ. धर्मचंद विद्यालंकार के कथा साहित्य में चित्रित दलित चेतना

डॉ. सुरेश कुमार
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
उकलाना मण्डी,
हिसार, हरियाणा, भारत

शोध संक्षेप

डॉ. धर्मचंद विद्यालंकार हिन्दी साहित्य के उदीयमान कहानीकार उपन्यासकार निबंधकार, समीक्षक एवं सक्रिय राजनीतिक कार्यकर्ता हैं। उनका सम्पूर्ण कथा साहित्य लोक या ग्रामीण जीवन को समर्पित है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन और परिवेश की रुढ़ियों, अंधविश्वासों, आडम्बरों, आपदाओं, विपदाओं, विषमताओं और अभावों जैसी अनेक प्रकार की जटिलताओं के साथ ही ग्रामीणों की सादगी सरलता, निश्छलता, कर्मठता संवेदनशीलता आदि सद्वृतियों का भी स्वाभाविक, सजीव एवं यथार्थ चित्रण किया है। उनकी कहानियां भारतीय समाज में हो रहे सामाजिक परिवर्तनों का दहकता दस्तावेज है। प्रस्तुत शोध पत्र में डॉ. धर्मचन्द विद्यालंकार के कथा साहित्य में चित्रित दलित चेतना पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

डॉ. धर्मचन्द विद्यालंकार का जन्म ग्रामीण परिवेश में हुआ है। इसलिए उनका ग्रामीण जीवन के प्रति विशेष लगाव रहा है। गाँव में विभिन्न वर्गो के लोग रहते हैं। डॉ. धर्मचन्द विद्यालंकार ने ग्रामीण जीवन को न केवल निकट से देखा है, अपितु उसे जिया व समझा भी है। सदियों से पीड़ित, पतित, दलित, शोषित बहुसंख्यक समाज में नब्बे के दशक में सामाजिक व राजनीतिक सक्रियता का उन्मेष हुआ, वही उनकी कहानियों में परिलक्षित होता है। लेखक का वंचितों को वाणी देने का प्रयास स्तुत्य है। अब तक कुछ वर्ग या जाति ही सारे सता प्रतिष्ठानों के स्वामी थे बाकि उनके सेवक या शोषित। ऐसी स्थिति में साहित्य में बहुसंख्यक समाज की प्रगति पर जनवादी चेतना की मुखर अभिव्यक्ति स्वाभाविक ही है। ऐसी स्थिति में लेखक ने न केवल वास्तविकता से परिचित करवाया है, अपितु उनको अपने अधिकारों के प्रति जागरुक करने का प्रयास भी किया है। उनकी कहानियों में परस्पर सवर्ण व दलित संघर्ष का ही चित्रण हुआ है।

कथा साहित्य में दलित चेतना

इनका प्रथम कहानी संग्रह ? स्त्री व दलित को ही समर्पित है। वर्ग भेद में दलित चेतना के उभार और अन्य वर्णों से उसके टकराव को दिखाया गया है। कहानी का प्रमुख पात्र हरिया पढ़ लिख कर बड़ा अधिकारी बन जाता है। इसलिए उसके गांव के बूढ़े उसके भाग्य और जाति से ईर्ष्या करने लगते हैं। भाई ईब जातपात की कोई पिछाण ना सै। बड़े पढ़ और पैसे आला ही बड़ा से ईब तै। थम अपने हरियाणा ही देख लयो।1

उसके ठाठ बाट, आलीशान महल व उसके बच्चों की पढ़ाई लिखाई इन स्वर्णों के लिए असहय हो जाती है। जब हरिया की लड़की की बारात आती

है तो गांव के चौधरी हरिया के पास जाकर कहते हैं कि इस रास्ते पहले हमारी बारात आएगी क्योंकि हम गांव के चौधरी है। जब हरिया की लड़की की बारात नाचती-कूदती हरि सिंह चैधरी के घर के आगे से गुजरती है तो वे चारपाई लगाकार रास्ता रोक देते हैं। फिर तो सवर्ण दलितों का आपस में टकराव हो जाता है। सवर्ण बारातियों को पीटना शुरु कर देते हैं। कई बारातियों के सिर फूट जाते हैं, कई बेहोश होकर जमीन पर गिर जाते हैं, कुछ गलियों में इधर-उधर छिपकर अपनी जान बचाते है। इसके बाद गांव के चौधरी हरिया व उसकी बिरादरी से माफी मांगने के लिए जाते हैं। किन्तु अब तो यह स्थिति हरिया के लिए भी असह्य हो गयी थी। वह आक्रोश प्रकट करते हुए कहता है - मैं तुमको एक-एक करके देख लूंगा - तुम हमें समझते क्या हो ? हमारी भी इज्जत और औकात है। राजकाज में आज हमारी तुम्हारे से ज्यादा चलती है। तुम सिर्फ यहीं के शेर बनते हो। जब थाने जाओगे तो मालूम हो जाएगा कि मैं क्या हूँ ?"2

इसी प्रकार प्रतिशोध कहानी में सवर्ण और दलित के परस्पर संघर्ष का चित्रण करते हुए सवर्णों द्वारा उनका शोषण, मानहानि, द्वेष की भावना, अग्नि में स्वाहा किए जाते गरीब आदि का मार्मिक चित्रण हुआ है।

प्रस्तुत कहानी में सुक्खन की मार्मिक कथा का चित्रण हुआ है। सुक्खन व उसकी पत्नी जब ठाकुर के खेत में जाने से मना कर देते हैं तो ठाकुर सभी सवर्णों को उसके विरुद्ध भड़का देता है। सारे सर्वण दलितों पर टूट पड़ते हैं। तभी सुक्खन की पत्नी सुक्खो आक्रोशित सवर्णों से आक्रोश में आकर कहती है- ''खबरदार जो इनको कुछ कहा तो, तुम्हें शर्म नहीं आती जो इतने बड़े-बड़े आदमी इतने हजूम को लेकर हम अकेले-दुकेले गरीबों पर चढ़ आए हो।''3

बस फिर क्या था सवर्णों ने दलित बच्चों स्त्रियों व बूढ़ों को पीटना शुरु कर दिया, उनके घर जला दिए गए। अग्नि आकाश को छू रही थी। मांस के जलने से सारा वातावरण दूषित को गया था। सूचना पाकर पुलिस भी आ जाती है। गांव के चौधरी उनसे दलितों की सहायता की प्रार्थना करते हैं। उपायुक्त महोदय ने सर्वणों के प्रति सहानुभूति व भाईचारे को देखकर फायर ब्रिगेड बुलाकर आग पर तो काबू पा लिया, किन्तु दलितों के हृदय में धधक रही ज्वाला को शान्त करने वाला कोई नहीं था, न सरकार, न भगवान। सुक्खा बार-बार विधाता को कोसती कभी अपने भाग्य को कोसती कि भगवान ने उसे सुन्दर क्यों बनाया और यदि उसे सुन्दरता ही देनी थी तो ऐसी जाति में क्यों उत्पन्न किया जिसे इस संसार के सौंदर्य और वैभव को उपयोग करने का अधिकार ही नहीं है। इसी ग्लानि के कारण एक दिन वह अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेती है।

इसी प्रकार 'अन्तर्जातीय विवाह में भी जातिभेद की समस्या को उठाया गया है। रमेश व भुवनेश अपनी जातियों से उपर उठने के चक्कर में सवर्ण युवतियों से विवाह कर लेते हैं। यह सोचकर कि अगली पीढ़ी में तो कोई उन्हें नीच या कमीन नहीं कहेगा। लेकिन फिर भी वे वहीं रहते हैं। उन लोगों की नजरों में उठने के और भी गिर जाते हैं। जैसे उन्होंने अन्तजार्तीय विवाह करके कोई बहुत बड़ा अपराध कर दिया हो।

इसी प्रकार आग की दहक में एक दलित युवती के आत्म-सम्मान का चित्रण किया गया है, वह अपने आत्म-सम्मान व अस्मिता की रक्षा के लिए ज्वालामुखी बनकर प्रकट होती है। इस

कहानी का प्रमुख पात्र रामनाथ है, जो वैश्य है। चंपी उसकी महतरानी है, जो उसके घर का सारा काम काज करती है। गुलाबो चंपी की पुत्री है। वह यौवन व सौंदर्य की प्रतिमूर्ति है। रामनाथ की कुदृष्टि उसकी नवयौवना पुत्री पर पड़ जाती है। वह उसका शरीरिक शोषण करने के बहाने उसकी मां की जगह उसे काम पर आने के लिए कहता है। किन्तु उसकी मां चंपी अपनी जवान बेटी को काम करने से मना करते हुए कहती है ''आप लोगन कौ कहना अपनी जगह सही है पर ... अब जवान छोरी घर के बाहर भी नहीं भेजी जाती और मैं भेूजं भी तो वो भी कितने क्लि तक की है, फेर तो लाडो परायी हो ही जानी है।''4

किन्तु जब रामनाथ व उसकी पत्नी चंपी की वृद्धावस्था को देखकर उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करके है तो चंपी अपनी पुत्री गुलाबो को रामनाथ के घर काम करने के लिए भेजने को तैयार हो जाती है। चंपी के इस आग्रह को स्वीकार कर लेने के बाद तो रामनाथ की बांछे खिल जाती है क्योंकि उसकी मनचाही इच्छा पूरी हो गयी थी। रामनाथ गुलाबो की सुन्दरता पर मोहित हो जाता है। वह उसके प्रति अपने प्रेम का इजहार करता है। वह किसी न किसी बहाने गुलाबो का स्पर्श करना चाहता है। गुलाबो उसक असामान्य व्यवहार को देखकर सहम जाती और कहती है कि तुम्हें शर्म आनी चाहिए जो अपनी बेटी की उम्र की लड़की के साथ ऐसा कर रहे हो। रामनाथ अपनी हरकतों से बाज नहीं आता। वह गुलाबो के अधरों को चूमने का प्रयास करता है तो गुलाबो उसे धक्का देकर दूर फेंक देती है और आग की भांति दहक उठती है और उसे ललकारते हुए कहती है ''खबरदार जो इधर को बढ़ा तो कामकीट, वरना तेरी चमड़ी उधेड़ दूंगी।'5

इसी प्रकार बाड़ो के बीच कहानी में भी लेखक ने उच्च वर्ग की निम्न वर्ग के प्रति तुच्छ मानसिकता को ही दर्शाया है, कहानी का प्रमुख पात्र रहतु है। वह ठाकुर की भैंसों को चराता नहलाता, उनका दूध दूहता था किन्तु ठाकुर के बर्तनों को वह छू नहीं सकता था। गांव की स्त्रियां भी उसकी पत्नी को कुएं से पानी नहीं भरने देती थी। यदि वह उसके बर्तनों में पानी भरने के लिए कहती तो उच्च वर्ग की स्त्रियां मुंह चिढ़ाकर कहती-

हमारे घर पर बहुत काम सैम हम कोई थारे ताई बैठे सै ?सरकार से कहकै अपना नल लाल्यौ हम कोई थारे नौकर ना लाग रे सै 6

एक बार रहतु की पत्नी रत्नों गांव के पंडित के घर लड़की की शादी में शगुन के रुप में बर्तन आदि रख आती है। जब सवर्णों व बारातियों की नजर उन बर्तनों पर लिखे नाम पर पड़ती है तो सारे बाराती हंगामा करते हुए कहते है- म्हारा तो धर्म भ्रष्ट हो गया

दूसरा - सारा ही दहेज अपवित्र हो गया

तीसरा - कन्या दान का लग्न ही बिगड गया सै

चौथा - हमनै तो यो ब्याह का ही ब्यौतना बनता दीखता।

पांचवा - यह लड़की वालों ने म्हारा अपमान करान ताई जान बूझकै करया सै 7

इस हंगामे के बाद जैसे तैसे विवाह तो सम्पन्न हो जाता है किन्तु रहतु के मन की शांति भंग हो चुकी थी। इस घटना से व्यथित होकर वह अपना धर्म परिवर्तन कर लेता है और रहतु भंगी से रहमान मियां बन जाता है। उसके मन में उथल पुथल मची हुई थी। वह सोच रहा था कि व्यक्ति इस प्रकार के जाति पाति के बाड़ो में क्यों कैद होना चाहता है। वह हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख-ईसाई न बनकर एक इंसान क्यों नहीं बन जाता।

इसी प्रकार बौनापन कहानी में भी लेखक ने जातिभेद की समस्या को ही उठाया है। इस कहानी का प्रमुख पात्र श्याम सुन्दर पढ़ लिख कर सरकारी सेवा में भर्ती हो जाता हैं फिर वह पदोन्नति प्राप्त कर अनुभाग अधिकारी बन जाता है। पहले जो सहकर्मी उसके साथ बड़े प्यार से उसका नाम लेकर उस से बातें करते थे, उसके साथ चाय पानी पीते थे, अब तो वे भी उस से नजरें चुराने लगते हैं। यही हाल उसके गांव में था। पहले जब वह गांव जाता था तो सभी उसका बड़ा आदर व सम्मान करते थे। किन्तु अब तो उनका व्यवहार भी बदल गया था। यह बात उसे कचोट रही थी कि सामान्य जाति का व्यक्ति चाहे छोटे पद पर हो, उसे तो खूब आदर व मान दिया जाता है जबकि वह पद व प्रतिष्ठा में उनसे बड़ा है, फिर भी उच्च वर्ग का व्यक्ति उससे बात भी नहीं करना चाहता। उच्च वर्ग की यह तुच्छ मानसिकता द्रष्टव्य है- ''यह सब तो आदमी के उपर है। फिर भाई आदमी की जाति का भी उसके व्यक्तित्व पर प्रभाव तो रहता ही है। हम जहां भी रहते हैं, शान के साथ रहते हैं।''8 क्रिया कर्म कहानी में भी लेखक ने जाति प्रथा की समस्या को ही उठाया है। इसमें एक बिहारी दलित मजदूर की कथा है। उसकी पत्नी अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। उसके मोहल्ले में रहने वाला मुस्लिम इदरीश उसके बच्चों की देखभाल करता है। एक मुस्लिम द्वारा उसके बच्चों का पालन पोषण करते देख उसके साथी मजदूर भी उस से ईष्र्या करने लगते हैं। सभी क्रियाकर्म के बाद जब वह सामूहिक भोज का आयोजन करता है तो कोई भी दलित उसके भोज में शामिल नहीं होता। यह कहते-कहते उसकी आँखों से विवशता और दीनता के आंसू छलक पड़ते है।

प्रगतिशील कहानी में भी सवर्ण और निम्न वर्ग के बीच पड़ी खाई को पाटने के परस्पर दो युवकों की विचार भिन्नता का चित्रण हुआ है। इस कहानी में बताया गया है कि चाहे मनुष्य ईश्वर का अंश है किन्तु इंसान और इंसान में कोई एकता नहीं है। समाज का एक वर्ग उसे आज भी हेय दृष्टि से देखता है। आज भी वह मध्यकालीन संस्कारों में जकड़ा हुआ है।

इसी प्रकार लोकतंत्र कहानी में भी दलित वर्ग की दयनीय स्थिति का चित्रण हुआ है। सारा देश भ्रष्टाचार के अथाह समुद्र में डूबा हुआ है। इस स्थिति में दलित वर्ग का सामाजिक एवं राजनीतिक स्तर गिरता जा रहा है। फिर उसका राजनीतिक पहंुच के बिना कोई कार्य नहीं होता। पहले तो उसे कहीं बुलाया ही नहीं जाता और यदि कभी विवाह उत्सव आदि में आमंत्रित कर लिया जाता है तो उसे समुचित सम्मान नहीं दिया जाता। सरकारी कार्यालयों व दफ्तरों में तो उसकी और भी बुरी हालत होती है। यदि वह किसी अधिकारी के पास जाता है कि वह उसकी सुनता तक नहीं और उसे दूसरे के पास धकेल देता है। अपनी इसी व्यथा को सुनाते हुए रामलाल आवेश में आकर कहता है ''भाई श्याम लाल आज आम आदमी की कहीं कोई पूछ नहीं होती। आफिसों में हम जाते हैं तो घंटो तक लाईन में खड़े रहते है या फिर पागल कुतों की कोई तरह इधर उधर भौंकते फिरते हैं।''9

सवर्ण लोग अपने अफसरों के पास सीधे चले जाते हैं जैसे कि ये आफिस उनके रिश्तेदारों के हो। पर दलित जाति वालों ने न जाने कौन सा अपराध कर दिया है कि वहां पर कोई भी हम जैसे आम आदमियों से बात नहीं करता। हमारी शक्ल या लिबास देखकर कोई भी बैठने तक को नहीं कहता।

इसी प्रकार समता कहानी में सवर्ण और दलित के परस्पर संघर्ष का चित्रण हुआ है। सवर्ण उसे अब भी अछूत व त्याज्य मानता है। वह सोचता है कि दलित चाहे कितना भी पढ़ लिख ले, कितना ही बड़ा अफसर क्यों न बन जाए, फिर भी वे उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं। इसी प्रकार नये युग का सूत्रपात कहानी में भी सवर्ण और दलित के आपसी टकराव का चित्रण किया गया है। अभी तक तो दलित व अल्पसंख्यक सवर्ण का ही साथ देते आए थे किन्तु जब से मंडल कमीशन लागू हुआ है तब से उनमें भी एक राजनीतिक चेतना आ गयी है। अब उनमें भी शक्ति और सत्ता का आकर्षण बढ़ गया है। वे अब सवर्णों के विरुध गोल बंद हो रहे हैं। अब दलित व अल्पसंख्यक भी अपने अधिकारों के प्रति जागरुक व सचेत हो गए हैं।

इसी प्रकार 'औकात' कहानी में भी जाति भेद की समस्या को उठाया गया है। सवर्णों ने अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए निम्न जाति में भी वर्ग विभाजन कर दिया है। सवर्ण दलित को न चाहते हुए भी अपना मत नहीं देता बल्कि उस से भी निम्न जाति के व्यक्ति को दे देता है। इस प्रकार सवर्ण दलितों को भी उपवर्गों में बांट कर उन्हें अपनी इच्छानुसार चला रहे हैं।

इसी प्रकार 'बाल हठ' कहानी में भी सामन्ती शोषण के चलते दलित चेतना की ही अभिव्यक्ति हुई है। कहानी का प्रमुख पात्र ठाकुर शार्दूलसिंह है। गांव में उसी के कानून चलते हैं। वह समाज के हर वर्ग का खूब शोषण करता है। जब उसके पास घी कमी हो जाती तो घियावन कर वसूलता; जब कपड़ों की कमी हो जाती तो कपड़ावन कर तथा ब्याह के अवसर पर ब्याहवन कर लगाता। वह खुद तो हवेलीनुमा महल में रहता था तथा दलित घास फूंस के बने छप्परों में रहते थे। यदि दलित का कोई बच्चा बाल हठ करने लगता तो रानी उन्हें तुरंत फटकार देती। यहां पर सवर्णो की दलितों के प्रति अछूत की भावना प्रकट हुई है- "छोटे लोगों को मुंह नहीं लगाते सोना। नही ंतो ये सिर पर ही चढ़ने लगते हैं। देखो न ये माली की छोरी भी तुम्हारी देखा-देखी कांच की चूड़ियां पहनने लगी, कल को सोना चांदी भी पहरेगी। इसकी होड़ से अहीर और गुजरों, मीणों की छोरियां भी ऐसा ही करेंगी, कल को ये चूड़ी, चमारी भी ऐसा ही करेंगी।"10

निष्कर्ष

निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि डॉ. धर्मचन्द विद्यालंकार ने सवर्ण और दलित के आपसी टकराव को यथार्थ रुप में प्रस्तुत किया है। लेखक ने सवर्णों द्वारा दलितों का शोषण मानहानि, उनके प्रति द्वेष की भावना का यथार्थ एवं जीवंत वर्णन किया है। दलित या शोषित चाहे कितना ही पढ़ लिख क्यों न ले, वह कितना ही बड़ा अफसर क्यों न बन जाए। सवर्ण लोग उसे अछूत ही समझते हैं। सवर्ण लोग उसकी तरक्की व उन्नति को देखकर जल भुन जाते है। इसी तरह पहले तो दलित को किसी समारोह या स्थान पर बुलाया नहीं जाता और बुला भी लिया जाता है तो उसे उचित स्थान व सम्मान नहीं दिया जाता। सब उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं। चुनाव के समय पर भी दलितों के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। अब तक तो दलित केवल सवर्णों को ही अपना मत देते आए थे किन्तु जब उनको दलितों को अपना मत देना पड़ता है तो उनके उपर वज्रपात हो जाता है। दलित उनके खेतों और दुकानों पर दिन-रात जी तोड़ मेहनत करते हैं, तो भी उन्हें पूरी मजदूरी नहीं दी जाती। उन्हें मिट्टी के टूटे फूटे बर्तनों में खाने को दिया जाता है। कमाई तो ये दलितों की खाते हैं किन्तु

उनकी परछाई भी अपने पर पड़ने नहीं देते। मन्दिरों व कुओं आदि पर उन्हें प्रवेश व चढ़ने नहीं दिया जाता। यदि कोई दलित भूलकर मन्दिरों या इनके कुओं पर चला जाता है तो उन्हें तरह-तरह से प्रताड़ित किया जाता है। उनकी बेटियों व स्त्रियों को वे लालसा की दृष्टि से देखते हैं। अवसर पाकर उनका शारीरिक शोषण करने की ताक में रहते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि डॉ. धर्मचंद विद्यालंकार ने दलित वर्ग की कारुणिक दशा का मार्मिक एवं यथार्थ चित्रण किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. धर्मचन्द विद्यालंकार, चौबीसी का चबूतरा, आधुनिक प्रकाशन मौजपुर, दिल्ली 1949 पृष्ठ 127

2. वहीं, पृष्ठ 128

3. डॉ. धर्मचन्द विद्यालंकार, झूठी कसम तथा अन्य कहानियां, वीर साहित्य प्रकाशन फतेहपुरी, दिल्ली, पृष्ठ 1995

4. वहीं, आग की दहक अंगूर प्रकाशन शकरपुर दिल्ली 1995, पृष्ठ 85

5. वही, पृष्ठ 15

6. वही, पगड़ी सम्भाल जट्टा, आधुनिक प्रकाशन मौजपुर, दिल्ली- 1999, पृष्ठ 15

7. वही, पृष्ठ 18

8. वही, पृष्ठ 26

9. वही, झूठी कसम तथा अन्य कहानियां, वीर साहित्य प्रकाशन, फतेहपुरी, दिल्ली, 1995 पृष्ठ 97

10. वहीं, पृष्ठ 103